

# ZÚME सत्र 6 का वीडियो स्क्रिप्टस्

## वफादारी

इस सत्र में हम सीखेंगे कि ज्ञान और प्रशिक्षण की तुलना में आत्मिक वयस्कता विश्वासयोग्यता का बेहतर मापदंड कैसे है। दो विचार हैं जिसने आज चर्च में बहुत सी परेशानियाँ खड़ी कर दी है।

पहला विचार की किसी व्यक्ति की आत्मिक वयस्कता इस बात से जुड़ी है कि वे परमेश्वर के वचन के बारे में कितना जानते हैं। वे ऐसे जताते हैं जैसे सही धारणा – या रूढ़िवादी मत – किसी के विश्वास का अच्छा मापदंड है।

दूसरा विचार यह है कि सेवकाई में अगुआई की शुरुवात करने से पहले किसी व्यक्ति को "पूर्ण प्रशिक्षण" की आवश्यकता है। वे ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे सेवकाई करने के लिए किसी व्यक्ति की योग्यता का सही मापदंड संपूर्ण ज्ञान है।

पहले विचार के साथ परेशानी – रूढ़िवादी मत पर - या "सही धारणा" पर निर्भर रहना है कि शैतान वचन का ज्ञान किसी व्यक्ति से है। परमेश्वर का वचन कहता है – तुम विश्वास करते हो कि एक ही परमेश्वर है। अच्छा है! शैतान भी यह विश्वास करते हैं और काँपते हैं।

किसी व्यक्ति की आत्मिक वयस्कता का एक बेहतर मापदंड है ORTHOPRAXY - "सही अभ्यास"।

जो हम जानते हैं उस आधार पर वयस्कता को मापने के बजाय हमें आज्ञा मानने में और इसे बताने के प्रति विश्वासयोग्यता के बारे में ज्यादा चिंता करनी चाहिए।

नेतृत्व करने से पहले उस व्यक्ति को पूरी तरह से प्रशिक्षित होना चाहिए, इस दूसरे विचार के साथ परेशानी यह है कि कोई पूरी तरह से भी कभी प्रशिक्षित नहीं होता।

यीशु ने युवा अगुओं को भेजने के द्वारा उदाहरण दिखाया जिन्हें राज्य में महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अब भी बहुत सी बातें सीखनी बाकी थीं।

परमेश्वर का वचन कहता है - यीशु ने अपने बारह प्रेरितों को बुलाया और उन्हें दुष्टात्माओं और बीमारियों के ऊपर पूर्ण सामर्थ्य दी। फिर उन्होंने परमेश्वर के राज्य के बारे में बताने और बीमारों को चंगा करने के लिए उन्हें भेजा।

पतरस द्वारा अपने विश्वास के बताये जाने से पहले इन मनुष्यों को भेजा गया था कि यीशु उद्धारकर्ता हैं – हम इसे विश्वास का पहला कदम मानते हैं। और भेजे जाने के बाद भी यीशु ने कई बार गलतियों की वजह से पतरस को डाँटा और बाद में पतरस ने यीशु को पूरी तरह से नकारा। दूसरे चेले विवाद करने लगे कि परमेश्वर के आनेवाले राज्य में सबसे महान कौन है और किसे कौन सा काम मिलेगा।

उन्हें अब भी बहुत कुछ सीखना बाकी था लेकिन यीशु ने उन्हें काम दिया कि वे जो जानते हैं उसे दूसरों बतायें। ज्ञान से ज्यादा – विश्वासयोग्यता ऐसी चीज है जो तब शुरू हो सकती है जब कोई यीशु के पीछे चलना शुरू करता है।

प्रशिक्षण से ज्यादा – विश्वासयोग्यता इस बात से मापी जा सकती है कि हमें जो दिया गया है उसके साथ हम

क्या करते हैं।

यदि हम जो सुनते हैं उसका पालन करें और दूसरों को बतायें तो हम विश्वासयोग्य हैं।

यदि हम सुनते हैं लेकिन उसका पालन नहीं करते और इसे दूसरों को नहीं बताते तो हम विश्वासयोग्य नहीं हैं।

चेलों को बढ़ाते वक्त हम यह सुनिश्चित करें कि हम सही चीजों को माप रहे हैं।